संपादकीय

क्रांति की मिसाल बनीं बलिदानी वीरांगना

बहादुरी और देश के लिए बलिदान की भावना हो तो महिला-पुरुष का भेद मायने नहीं रखता- अंग्रेजी राज के विरुद्ध आजादी की लड़ाई के दौरान भारतीयों में यह भरोसा जगाया 'फायरब्रांड ऑफ बंगाल' के नाम से प्रसिद्ध वीरांगना प्रीतिलता वाड्डेदर ने। वे क्रांतिकारियों में शामिल हुईं। नस्लवादी सोच के प्रतीक एक क्लब पर हमले के दौरान उन्हें गोली लगी। तो गिरफ्तारी देने के बजाय खुद ही देश के लिए प्राण दे दिये।'मैं पकड़ी नहीं जाऊंगी, ये इरादा उसने बनाया था/ सूर्य सेन 'मास्टर दा' ने उसे, बंदूक चलाना सिखाया था। पहाड़तली यूरोपियन क्लब का साइनबोर्ड, क्रांतिकारियों का अगला निशाना था/ 'कुत्तों और भारतीयों' का प्रवेश निषेध है; इस नीच सोच को मिटाना था। पंजाबी युवक की वेशभूषा में साथियों के साथ हमला बोला उसने/ दुश्मन की गोली से ज़ख्मी हुई, तब सायनाइड खोला उसने। वीरकथाएं सुनती थी, लक्ष्मीबाई की वो मुरीद हुई/ 'वीरकन्या' प्रीतिलता , देश के लिए शहीद हुई। लड़कियां भी हो सकती हैं क्रांतिकारी, दुनिया को वो दिखा गई/ मातृभूमि की रक्षा के लिए ,खुद को वो मिटा गयी।'कविता की ये पंक्ति यां 'फायरब्रांड ऑफ बंगाल' के नाम से प्रसिद्ध प्रीतिलता वाड्डेदर के बारे में लिखी गयी हैं जिनका जन्म ब्रिटिश भारत के बंगाल प्रांत के चटगांव (वर्तमान बांग्लादेश) में हुआ था। वह एक बहादुर, अनुशासित और साहसी युवती थीं जो स्वतंत्रता संग्राम के प्रति गहरी निष्ठा और समर्पण रखती थीं। उन दिनों क्रांतिकारी समूहों में महिलाओं का शामिल होना दुर्लभ था। प्रीतिलता वाड्डेदर को न केवल शामिल किया गया बल्कि युद्ध और आक्रमणों का नेतृत्व करने का प्रशिक्षण भी दिया गया। प्रीतिलता का परिचय उनके एक क्रांतिकारी भाई ने मास्टरदा सूर्य सेन (1894-1934) से करवाया था। बता दें कि सूर्य सेन चटगांव में एक प्रसिद्ध राजनीतिक नेता थे। उन्होंने अम्बिका चक्रवर्ती, निर्मल सेन जैसे अन्य क्रांतिकारी नेताओं के साथ मिलकर एक क्रांतिकारी संगठन 'चटगांव रिपब्लिकन आर्मी' का गठन किया था। उनका उद्देश्य ब्रिटिश शासन को हिंसक विद्रोह के माध्यम से समाप्त कर देश को स्वतंत्र करवाना था। इसी क्रम में 18 अप्रैल 1930 को सूर्य सेन के नेतृत्व में चटगांव शस्त्रागार (आर्मरी) पर छापा मारा गया। इस घटना के बाद अनेक वीरतापूर्ण कार्यों का सिलसिला शुरू हो गया। दरअसल मास्टरदा 'पहाड़तली यूरोपियन क्लब' नामक एक नस्लवादी क्लब को निशाना बनाना चाहते थे। ब्रिटिश अधिकारी और उनकी पत्नियां हर शनिवार रात को वहां आया करती थीं। क्लब के बाहर लगे नोटिस बोर्ड पर लिखा था- 'कुत्तों और भारतीयों का प्रवेश वर्जित है।' प्रीतिलता वाड्डेदर समेत क्रांतिकारियों को 23 सितंबर, 1932 के दिन क्लब पर छापा मारकर उसे नष्ट करने का काम सौंपा गया था। उन्हें 15 लोगों के एक समूह का नेतृत्व करना था। प्रीतिलता ने पंजाबी पुरुष का वेश धारण किया। वे रात करीब 10:45 बजे क्लब पहुंचे और क्लब पर हमला कर दिया।

विनोद शर्मा, संपादक

वीआईपी कल्चर जनता के लिए परेशानी का कारण

चंद्रकांति आर्य

वीआईपी कल्चर नगरों और महानगरों में एक गंभीर समस्या बन गई है जिससे आम जनता को रोजाना काफी कठिनाई होती है हाल के दिनों में इस मुद्दे पर काफी चर्चा भी हुई है बड़े शहरों में वीआईपी संस्कृति से जुड़ी काफी दिक्कतें हैं जब भी किसी वीआईपी का काफिला निकलता है तो सुरक्षा कारणों से मुख्य सड़कों को 10 से 20 मिनट या उससे ज्यादा समय के लिए पूरी तरह बंद कर दिया जाता है। बड़े शहरों की पहले से ही व्यस्त सड़कों पर यह बॉटलनेक का काम करता है जिससे किलोमीटर लंबा जाम लग जाता है। इमरजेंसी सेवाओं पर भी असर पड़ता है अक्सर देखा गया है कि वीआईपी मूवमेंट के दौरान एंबुलेंस और फायर ब्रिगेड जैसी आपातकालीन गाड़ियां भी जाम में फस जाती है। जो जान माल के लिए जोखिम भरा हो सकता है।इससे समय की बर्बादी भी होती है ।वीआईपी कल्चर की वजह से दफ्तर जाने वालों और विद्यार्थियों का काफी समय सड़कों पर बर्बाद हो जाता है ।आम जनता में आक्रोश बढ़ जाता है लोकतंत्र में सड़कों पर सबका समान अधिकार होना चाहिए, ऐसा लोगों का मानना है। सुरक्षा प्रोटोकॉल के और सार्वजनिक सुविधाओं के लिए पुलिस को वीआईपी की सुरक्षा और आम जनता की सुविधा के लिए तालमेल बैठाना एक बड़ी चुनौती होती है। कई बार वीआईपी मूवमेंट के दौरान भारी वाहनों के प्रवेश पर रोक लगा दी जाती है। जिससे सप्लाई चैन और व्यापार पर भी असर पड़ता है। इन दिक्कतों को देखते हुए अब मांग की जा रही है की वीआईपी मूवमेंट के लिए कोई वैकल्पिक रास्ता निकाला जाए या तकनीकी का सहारा लेकर ट्रैफिक को बेहतरीन तरीके से मैनेज किया जाए। बड़े शहरों में वीआईपी आवाजाही के कारण लगने वाले ट्रैफिक जामो से जनता को होने वाली असुविधा एक गंभीर समस्या है ।सुरक्षा और सुगमता के बीच संतुलन बनाने के लिए कुछ व्यावहारिक विकल्प और सरकारी कदम इस तरह हो सकते हैं । कई प्रशासनिक और राजनीतिक कार्यो के लिए वीआईपी का भौतिक रूप से उपस्थित होना अनिवार्य नहीं है तो वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से यात्राओं की संख्या कम की जा सकती है। विकसित देशों की तर्ज पर सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत वीआईपी के लिए अन्य वैकल्पिक साधनों का उपयोग किया जा सकता है जिससे सड़कों पर कारों का काफिला कम हो। वीआईपी आवाजाही को पीक आवर्स जब लोग ऑफिस और बच्चे स्कूल जाते हैं, के बजाय ऐसे समय पर रखा जाए जब सड़कों पर ट्रैफिक का दबाव कम हो। सरकार द्वारा उठाए जाने वाले प्रभावी कदम स्मार्ट ट्रैफिक सिग्नल ट्रैफिक सिस्टम का उपयोग जो वीआईपी वहां के गुजरते ही तुरंत सामान्य ट्रैफिक को सुचारू कर दें । अस्पताल और वीआईपी मूवमेंट के लिए अलग लाइन या अंडरपास का निर्माण ताकि मुख्य मार्ग बाधित न हो वीआईपी मूवमेंट की जानकारी पहले से ही नेविगेशन एप्स, गूगल मैप्स और रेडियो पर देना ताकि

जनता वैकल्पिक मार्ग चुन सके। सुरक्षा की समीक्षा कर काफिले में वाहनों की संख्याओं को न्यूनतम भी किया जा सकता है वैकल्पिक सुरक्षा मॉडल सुरक्षा एजेंसियों को जारी ट्रैफिक के बजाय नॉनस्टॉप मूवमेंट मॉडल पर काम करना चाहिए इसमें सड़कों को पूरी तरह बंद करने की बजाय केवल उस जगह के लिए रोका जाता है जब काफिला वहां से गुजर रहा हो और काफिला निकलते ही तुरंत ट्रैफिक खोल दिया जाता है इन कदमों से न केवल आम आदमी का कीमती समय बचेगा बल्कि ईंधन की खपत और प्रदूषण में भी कमी आएगी। बड़े शहरों की भाग दौड़ और वीआईपी संस्कृति से कई तरह की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं बड़े शहरों में जब किसी विशेष व्यक्ति के लिए यातायात रोका जाता है या नियमों में ढील दी जाती है तो इसके परिणाम केवल असुविधाजनक नहीं बल्कि घातक होते हैं ,जब वीआईपी मूवमेंट के कारण ट्रैफिक रुकता है तो लाखों कामकाजी घंटो का नुकसान होता है। शहरों में अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ता है। कई बार करोड़ का नुकसान भी होता है आपातकालीन सेवाओं में भी बाधाएं आती है। सबसे हृदयविदारक स्थिति तब होती है जब वीआईपी काफिले के कारण एंबुलेंस या फायर ब्रिगेड जाम में फंस जाती है किसी के सुरक्षा के लिए किसी और के जीवन को जोखिम में डालना इस शहरों की सबसे बड़ी विडंबना है घंटे जाम में फंसने से आम नागरिकों में झुंझलाहट और रोड रेज बढ़ता है। यह सामाजिक असंतोष की भावनाओं को जन्म देता है, जहां नागरिक खुद को दोयम दर्जे का महसूस करने लगता है। भविष्य के लिए एक नई राह हैं वीआईपी सुरक्षा और जनहित के बीच एक संतुलन सेतु बनाने की आवश्यकता है। भौतिक रूप से रास्ता रोकने की बजाय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करके डायनेमिक ग्रीन कॉरिडोर बनाया जाना चाहिए जिससे काफिला भी निकलता है और पीछे का ट्रैफिक भी चलता रहे। से हवाई और जल मार्ग का विकल्प भी ले सकते हैं । महत्वपूर्ण व्यक्तियों के आवागमन के लिए, हेलीकॉप्टर सेवाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए ताकि सड़कों पर दबाव कम हो और कार्यक्रमों को सुबह या शाम के विशेष समय के बजाय रात के समय या दोपहर में निर्धारित किया जाना चाहिए। प्रोटोकॉल में सादगी को अपनाना चाहिए, सुरक्षा जरूरी है लेकिन दिखावा नहीं। वीआईपी काफिलो में गाड़ियों की संख्या कम करना चाहिए। सायरन का न्यूनतम प्रयोग करना केवल ध्वनि प्रदूषण नहीं घटाएगा बल्कि जनता के मन में सम्मान भी जगाएगा। शहरों के असली वीआईपी यहां की आम जनता है जो हर परिस्थिति में इस शहर को चलाए रखती है। यदि प्रशासन और नीति निर्धारक तकनीक और संवेदनशीलता का सही मिश्रण अपनाए तो हम एक ऐसी व्यवस्था देख पाएंगे जहां सुरक्षा का अर्थ किसी की राह रोकना नहीं बल्कि सबकी राह आसान करना होगा। यह बदलाव केवल नीतियों में नहीं बल्कि हमारी राजनीतिक सोच में भी अनिवार्य है। देश में भले ही वीआईपी कल्चर को खत्म करने के लिए कई कदम उठाए गए हो लेकिन हकीकत आज भी आम जनता के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है। सड़कों पर वीआईपी मूवमेंट के दौरान घंटे ट्रैफिक रोक दिया जाता है जिससे आम लोगों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ता है। सरकार समय-समय पर वीआईपी कल्चर खत्म करने की बात जरूर करती हैं लेकिन जमीनी स्तर पर उसका असर समिति नजर आता है। अब सवाल यह उठता कि आखिर कब तक आम आदमी विशेष अधिकार की कीमत चुकाता रहेगा। यह विचारणीय है, इसके लिए वीआईपी सुरक्षा और जनहित के बीच एक संतुलन सेतु बनाने की आवश्यकता है।

(लेखिका साहित्यकार हैं और समसामयिक मुद्दों पर लिखती हैं)

प्रोजेक्ट और पेटेंट बन गए करिअर की नींव

सही मायने जो छात्र अपने ज्ञान को नवाचार और व्यावहारिक उपलब्धियों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं, वे न केवल नियोक्ताओं को बल्कि समाज को भी यह बताते हैं कि भारत का युवा केवल डिग्रीधारी नहीं, बल्कि समाधानकर्ता और निर्माता है। आज के प्रतिस्पर्धी शैक्षणिक और व्यावसायिक परिवेश में केवल डिग्री प्राप्त करना किसी छात्र की योग्यता का पर्याप्त प्रमाण नहीं माना जाता। नियोक्ता अब ऐसे युवाओं की तलाश में हैं जो न केवल पाठ्यपुस्तकों के ज्ञान से परिचित हों, बल्कि वास्तविक जीवन की जटिल समस्याओं को सुलझाने की दृष्टि व क्षमता भी रखते हों। हाल ही में बी.टेक के कुछ प्रतिभाशाली छात्रों की एक प्रेरणादायक कहानी सामने आई, जिन्होंने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कीं। एक अत्याधुनिक कृषि-तकनीक परियोजना और एक पेटेंटेड जूते का डिज़ाइन और इन्हीं उपलब्धियों ने उनके करिअर का मार्ग प्रशस्त किया। पहली उपलब्धि थी एक अनूठी कृषि-तकनीक परियोजना, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) को मशरूम की व्यावसायिक खेती के साथ जोड़ा गया। मशरूम की खेती एक अत्यंत संवेदनशील प्रक्रिया है, जिसमें तापमान, आर्द्रता, प्रकाश व वायु संचरण का सटीक नियंत्रण अनिवार्य होता है। यह कार्य पूरी तरह मानवीय श्रम पर निर्भर था, जिससे न केवल उत्पादन लागत बढ़ती थी, बल्कि मानवीय चूक से फसल खराब होने का जोखिम भी रहता था। इन छात्रों ने आईओटी सेंसर्स, स्वचालित एक्चुएटर्स और एआई आधारित डेटा विश्लेषण को मिलाकर एक ऐसा स्मार्ट सिस्टम विकसित किया, जो मशरूम फार्म की पर्यावरणीय परिस्थितियों की रियल-टाइम निगरानी करता है और आवश्यकतानुसार स्वतः समायोजन करता है। इस प्रणाली की उल्लेखनीय उपलब्धि यह रही कि इसने मशरूम उत्पादन में मैन्युअल हस्तक्षेप को पचास प्रतिशत तक कम किया। यानी आधी मेहनत, आधी लागत और दोगुनी दक्षता। परियोजना ने न केवल स्थानीय किसानों की उत्पादकता में सुधार का मार्ग दिखाया, बल्कि बताया कि आधुनिक तकनीक कृषि क्षेत्र में किस प्रकार क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है। इस प्रोजेक्ट के दौरान छात्रों ने गहन शोध किया, विशेषज्ञों से मार्गदर्शन पाया और तकनीकी बाधाओं को पार कर एक कार्यशील प्रोटोटाइप तैयार किया। परियोजना केवल एक शैक्षणिक अभ्यास नहीं थी–वरन वास्तविक समस्या का वास्तविक समाधान था, जो उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप था व किसानी जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालने में सक्षम था। इसके समानांतर, इन छात्रों ने एक बिल्कुल भिन्न क्षेत्र में भी अपनी रचनात्मकता का परिचय दिया। उन्होंने एक विशेष जूते के तलवे का डिज़ाइन तैयार किया, जो एड़ी की समस्याओं जैसे प्लांटर फेसाइटिस, हील स्पर और दीर्घकालिक एड़ी दर्द से पीड़ित लोगों को अधिकतम आराम और राहत प्रदान करने के लिए तैयार किया गया है। यह महज एक फुटवियर उत्पाद नहीं, बल्कि स्वास्थ्य-केंद्रित इंजीनियरिंग समाधान है। इस डिज़ाइन में बायोमेकेनिकल सिद्धांतों का उपयोग करते हुए एड़ी पर पड़ने वाले दबाव को समान रूप से वितरित किया गया है, जिससे चलने-फिरने के दौरान दर्द में खासी कमी आती है। इस डिज़ाइन की मौलिकता और व्यावसायिक संभावनाओं को देखते हुए छात्रों ने इसके लिए पेटेंट आवेदन दाखिल किया। पेटेंट प्राप्त करना किसी भी इंजीनियरिंग छात्र के लिए एक असाधारण उपलब्धि है, जो आधिकारिक प्रमाण है कि उनका विचार मौलिक, उपयोगी और संरक्षण के योग्य है। इस पेटेंट ने न केवल उनके बौद्धिक योगदान को मान्यता दी, बल्कि उनके रिज़्यूमे को एक ऐसी विशिष्टता प्रदान की, जो किसी भी परीक्षा में अर्जित अंकों से अधिक प्रभावशाली थी। जब ये छात्र नौकरी के लिए साक्षात्कार देने पहुंचे, तो उनके रिज़्यूमे ने साक्षात्कारकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया। सामान्यतः फ्रेशर्स से शैक्षणिक ज्ञान की ही अपेक्षा की जाती है, परंतु इन छात्रों के पास इससे कहीं अधिक था– एक सिद्ध परियोजना, जिसने कृषि क्षेत्र में पचास फीसदी श्रम कम किया, और एक पेटेंटेड आविष्कार जो लाखों लोगों के दैनिक जीवन को प्रभावित करने की क्षमता रखता था। साक्षात्कार के दौरान उन्होंने अपनी परियोजना की तकनीकी कार्यप्रणाली, विकास के दौरान आई चुनौतियों व समाधान के बारे में विस्तार से बताया। कंपनियों के प्रतिनिधियों ने महसूस किया कि ये युवा न केवल सैद्धांतिक रूप से सक्षम हैं, बल्कि व्यावहारिक समस्याओं की पहचान कर उनका समाधान ढूंढने की दुर्लभ प्रतिभा भी रखते हैं। उनकी इस बहुआयामी क्षमता– जो एआई और आईओटी जैसी अत्याधुनिक तकनीकों से लेकर उत्पाद डिज़ाइन और बौद्धिक संपदा तक फैली हुई थी, ने उन्हें हजारों अन्य उम्मीदवारों की भीड़ में स्पष्ट रूप से अलग और विशिष्ट बना दिया। परिणामस्वरूप, उन्हें प्रतिष्ठित कंपनियों से आकर्षक जॉब ऑफर प्राप्त हुए और उन्होंने एक उज्ज्वल करिअर की नींव रखी। निःसंदेह, यह प्रेरक उदाहरण हर उस छात्र हेतु महत्वपूर्ण संदेश है जो अपने करिअर को लेकर गंभीर हैं।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत आबना नदी तट पर गहरीकरण अभियान का शुभारंभ

50,000 वर्गमीटर क्षेत्र में किया जा रहा गहरीकरण, सौंदर्यीकरण एवं साफ-सफाई कार्य

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा

जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत आज आबना नदी के तट पर स्वच्छता, गहरीकरण एवं सौंदर्यीकरण कार्य का विधिवत शुभारंभ किया गया। अभियान के तहत लगभग 50,000 वर्गमीटर क्षेत्र में नदी तट की साफ-सफाई, गहरीकरण एवं सौंदर्यीकरण कार्य किया जा रहा है। इस महत्वपूर्ण अभियान में MIC सदस्य श्री राजेश यादव, आयुक्त श्रीमती प्रियंका राजावत, नगर निगम के अधिकारी-कर्मचारी, पत्रिका समूह से श्री राजेश पटेल एवं उनकी टीम, बालाजी ग्रुप सहित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के सदस्य एवं नागरिकजन उपस्थित रहे। मानव श्रृंखला बनाकर हटाया गया नदी तट का कचरा कार्यक्रम की शुरुआत सभी उपस्थितजनों द्वारा मानव श्रृंखला बनाकर नदी किनारे जमा कचरे को बाहर निकालने से हुई। स्वच्छता कार्य हेतु प्रतिभागियों को ग्लव्स प्रदान किए गए, जिससे सुरक्षित एवं व्यवस्थित रूप से अभियान संचालित किया गया। स्वच्छता अभियान के पश्चात पोकलेन मशीन की सहायता से नदी की सफाई, गहरीकरण एवं सौंदर्यीकरण कार्य प्रारंभ किया गया। इस पहल का उद्देश्य वर्षाजल संरक्षण, जल स्रोतों का पुनर्जीवन एवं पर्यावरण संतुलन को मजबूत करना है। इस अवसर पर आयुक्त श्रीमती प्रियंका राजावत ने उपस्थित सभी नागरिकों, अधिकारियों एवं सामाजिक संगठनों को जल संरक्षण, रेन वाटर हार्वेस्टिंग एवं स्वच्छता बनाए रखने की शपथ दिलाई। आज का अभियान नगर निगम, पत्रिका समूह के अमृतम जलम अभियान एवं बालाजी ग्रुप के संयुक्त प्रयासों से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। नगर निगम द्वारा भविष्य में भी ऐसे अभियान निरंतर संचालित किए जाएंगे तथा आमजन से सक्रिय सहभागिता एवं सहयोग की अपेक्षा की गई।

युवाओं के सुनहरे भविष्य का खुला द्वार

मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने किया 'L&T ट्रेनिंग सेंटर' का भव्य आगाज़

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा

हरसूद विधानसभा क्षेत्र के आदिवासियों के दिलों पर राज करने वाले मंत्री डॉक्टर कुं विजय शाह अपने जनप्रतिनिधि होने का पूरा दायित्व निभा रहे हैं, इसीलिए विधानसभा क्षेत्र की जनता ने उन्हें लगातार आशीर्वाद दिया है। मंत्री कुं विजय शाह ने अपने विधानसभा क्षेत्र में विकास की गंगा बहाकर सभी मूलभूत सेवाएं उपलब्ध कराई हैं। समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि अपने क्षेत्र ही नहीं जिले के बेरोजगार युवाओं के लिए उन्होंने कदम बढ़ाए हैं। जनजातीय अंचल के युवाओं को आत्मनिर्भर और हुनरमंद बनाने की दिशा में रविवार को एक बड़ा अध्याय जुड़ गया। मध्यप्रदेश शासन के जनजातीय कार्य विभाग के कैबिनेट मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह के मुख्य आतिथ्य में ग्राम आंवलिया में 'लार्सन एंड टुब्रो (रूज्ञ) निर्माण कौशल प्रशिक्षण केंद्र' का गरिमामय शुभारंभ हुआ। वन विभाग और देश की प्रतिष्ठित कंपनी रूज्ञ के इस संयुक्त प्रयास से अब क्षेत्र के युवाओं को विश्वस्तरीय तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त होगा। क्षेत्र के विधायक प्रदेश शासन में मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा कि हमारा लक्ष्य केवल शिक्षा देना नहीं, बल्कि युवाओं को सीधे रोजगार के काबिल बनाना है। उन्होंने जोर देकर कहा– 'अब हमारे जनजातीय और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के बेटों को बड़े शहरों में भटकना नहीं पड़ेगा।

इस केंद्र में उन्हें आधुनिक निर्माण तकनीक सिखाई जाएगी, जिससे वे सम्मानजनक वेतन और सुविधाओं के साथ देश की मुख्यधारा से जुड़ेंगे। प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि मंत्री विजय शाह ने इस नवाचार के लिए वन विभाग के अधिकारियों और रूज्ञ प्रबंधन की सराहना करते हुए इसे क्षेत्र की तस्वीर बदलने वाली पहल बताया।निःशुल्क सुविधाओं के साथ इस केंद्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ युवाओं के लिए रहना, खाना, यूनिफॉर्म और जूते पूरी तरह निःशुल्क हैं। प्रशिक्षण के दौरान और उसके बाद रोजगार के बेहतरीन अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे । कार्यक्रम में रूज्ञ कंपनी के उच्चाधिकारी, वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि विशेष रूप से उपस्थित रहे। शुभारंभ के अवसर पर बड़ी संख्या में युवाओं ने पंजीकरण कराया, जिससे क्षेत्र में भारी उत्साह देखा गया।

वार्ड नंबर 10 कब्रिस्तान मोहल्ला में हो रहे अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

कार्रवाई के नाम पर आम, कमजोर और गरीब परिवारों को बार-बार नोटिस देकर इस भीषण गर्मी में परेशान किया जा रहा है। रेलवे के नाम पर जिन मकानों के पट्टे पहले ही दिए जा चुके हैं, उन्हें भी तोड़ने की कार्रवाई अन्यायपूर्ण और असंवेदनशील है। इसी विषय को लेकर आज शहर काजी सैयद निसार अली सहाब के नेतृत्व में मुस्लिम समाज व कांग्रेस परिवार प्रभावित परिवारों के साथ बैठक करके उनकी समस्याओं पर चर्चा की गई और उनके हक की लड़ाई में साथ खड़ा रहना का वादा किया है। इस मौके पर मुस्लिम समाज से हाजी सलीम पटेल साहब,अकरम जाटु सहाब, हज़रत खानशाहवली वार्ड क्रमांक 36 के पार्षद मोहम्मद शब्बीर क़ादरी साहब, शहर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष प्रतिभा रघुवंशी जी, नेता प्रतिपक्ष मुल्लु राठौर जी, इमरान गौरी जी, मुजाहिद कुरैशी जी, सय्यद असलम जी, इमरान पटेल जी, मनोज मंडलोई आदि मौजूद रहे।

ए-मां तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगीः प्रमोद जैन

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

माँ वह है जो सबकी जगह ले सकती है, लेकिन जिसकी जगह कोई और नहीं ले सकता। मां घर की धड़कन होती है और उसके बिना घर में कोई जान नहीं होती। माँ का प्यार एक दिशासूचक यंत्र की तरह होता है जो जीवन की यात्रा में हमारा मार्गदर्शन करता है। मां भगवान और प्रथम गुरु होती है। यह बात सदभावना मंच संस्थापक प्रमोद जैन ने मातृ दिवस के मौके पर उपस्थित सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कही। यह जानकारी देते हुए मंच के निर्मल मंगवानी ने बताया कि इस दौरान श्री तोमर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री तोमर ने कहा कि माँ सिर्फ माँ ही नहीं होती, बल्कि हमारी सबसे अच्छी दोस्त भी होती है। सुरेंद्र गीते, अनूप शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए।श्री चौधरी एवं श्री शाक्य ने मां पर अपनी सुंदर कविता सुनायीं। इस दौरान सद्भावना मंच संस्थापक प्रमोद जैन, पूर्व डीएसपी आनंद तोमर, डॉ. जगदीशचन्द्र चौरे, सुरेंद्र गीते, पं. कृष्ण कुमार व्यास, राधेश्याम शाक्य, देवेंद्र जैन, निर्मल मंगवानी, त्रिलोक चौधरी, अनुप शर्मा, ललीत चौरे, गणेश भावसार, सतीश मुदीराज, महेश मूलचंदानी, जीडी सराफ, धीरज नेगी, डॉ.एमएम कुरैशी, कमल नागपाल, अशोक जैन, सुभाष मीणा, रजत सोहनी, कैलाश पटेल आदि सहित अनेक मंच सदस्यों ने विचार गोष्ठी, कविता एवं गीत के माध्यम से मां को नमन किया।

स्वामी, भाग्यमीडिया पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक राजेश शर्मा द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप 11 प्रेस काम्पलेक्स जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित कर, जी-11 प्रथम तल गोयल निकेत जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित, पिन-462011, संपादक : विनोद शर्मा, फोन नं. 0755-4512708, पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार सभी मामलों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा । RNI No. MPHIN/2016/68059